प्रथम अध्याय

"विष्णुदत्त राकेश : व्यक्तित्व और कृतित्व"

प्रथम अध्याय

"विष्णुदत्त राकेश : व्यक्तित्व और कृतित्व"

1.1 व्यक्ति-परिचय -

किसी भी साहित्यकार का अध्ययन करने के पूर्व उसके व्यक्तित्व से परिचित होना आवश्यक हो जाता है। व्यक्तित्व के अध्ययन के बिना साहित्यकार का अध्ययन अधूरा माना जाता है। साहित्यकार जिस वातावरण में पला, बढ़ा है उसका प्रभाव निश्चित ही उसके साहित्य पर दिखाई देता है। इसे स्पष्ट करते हुए डॉ. विवेक द्विवेदी जी लिखते हैं- "साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रतिबिंब ही उसकी रचनाधर्मिता में दिखाई देता है।रचनाकार जो कुछ करता है, रचना की पृष्ठभूमि उसी से निर्मित होती है और वाणी उसे शब्द देकर प्रवाह में बदल देती है।"[1] अतः कहना गलत नहीं होगा कि साहित्यकार का साहित्य उसके जीवन का प्रतिबिंब होता है। कवि राकेश जी का व्यक्तित्व भी इसी कोटि में आता है। अतः उनके रचना संसार को सही अर्थों में जानना होगा तो उनके व्यक्तित्व की तरफ पीट मोड़ना समीचीन नहीं होगा। अतः कवि विष्णुदत्त राकेश जी के जीवन परिचय का विवेचन-विश्लेषण यहाँ आवश्यक समझकर प्रस्तुत किया जा रहा है -

1.1.1 जन्म तिथि तथा जन्म स्थान -

हिंदी साहित्य जगत् के प्रसिद्ध कवि, समीक्षक एवं चिंतक विष्णुदत्त राकेश जी का जन्म 8 मार्च, 1941 किनौनी मुजफ्फर नगर (उ. प्र.) के परिवार में हुआ। डॉ. विष्णुदत्त राकेश भारतीय साहित्य दर्शन, संस्कृति एवं धर्म साधनाओं के सर्वमान्य विद्वान हैं। उनके लेखन से पौराणिक काव्य फिर से जीवित हुआ है ऐसा लगता है।

1.1.2 माता-पिता -

विष्णुदत्त राकेश जी के पिता का नाम पंडित चंद्रभानु पालीवाल तथा उनकी माता का नाम श्रीमती रूक्मणि देवी था। माँ धार्मिक प्रवृत्ति की होने से विष्णुदत्त पर इसका अधिक

---

1. डॉ. विवेक द्विवेदी - भीष्म साहनी : उपन्यास साहित्य, पृ. 1

प्रभाव रहा है। उनके जीवन में माता-पिता के अलावा किसी को भी स्थान नहीं है। पिता के धर्मज्ञान का प्रभाव कवि राकेश जी पर दिखाई देता है। उनके माता-पिता के अखंड परिश्रम कारण कवि अपने जिंदगी में सफल हो सके। राकेश जी अपने माता-पिता में परमेश्वर-पार्वती का दर्शन करते थे।

1.1.3 गुरु -

जिंदगी के उतार-चढ़ाव में किसी भी कार्य को संपन्न करने के लिए मार्गदर्शन की जरूरी होती है। जीवन में दिशा का अपना अलग ही महत्त्व होता है और ये दिशा देने का काम गुरु करते हैं। कवि राकेश जी के जीवन में भी गुरु को आदरणीय स्थान मिला है। उनके गुरुवर्यों में विशेषतः पंडित विश्वनाथ प्रसाद, आचार्य पंडित किशोरीदास बाजपेई, आदरणीय डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, श्री. डॉ. विजेंद्र स्नातक, गुरुवर्य डॉ. नित्यानंद शर्मा तथा रसिक संप्रदाय के परमाचार्य श्री. स्वामी सीताराम शरण जी आदिओं के मौलिक विचारों से कवि राकेश जी का जीवन प्रभावपूर्ण बना हुआ है।

1.1.4 मित्र परिवार -

उनके जीवन में मित्र परिवार का स्थान भी महत्त्वपूर्ण है। जिनकी प्रेरणा उन्हें अपने साहित्यिक जीवन में हो गई। उनके साहित्यिक मित्र हैं- पंडित कृष्णकुमार कौशिक, डॉ. नगेंद्र, श्री. राजेंद्रनाथ पांडेय, विजयपाल सिंह, डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी आदि। इनके सहयोग से जीवन में सफल हो सके। इन मित्रों के साथ उनके आत्मीय तथा मित्रतापूर्ण संबंध रहे हैं। जाने अनजाने में यह मित्र विष्णुदत्त के जीवन को निखार लाए हैं।

1.1.5 शिक्षा -

कवि की प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में हुई है। पारिवारिक, आर्थिक स्थिति अत्यंत सामान्य होने के कारण उन्हें शुरू से संघर्ष करना पड़ा। उन्होने जोधपुर विश्वविद्यापय से पीएच्. डी. तथा विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से डी. लिट. की है। उन्हें सर्वोच्च अकादमिक उपाधि से विभूषित किया गया है। अतः कहना आवश्यक नहीं कि राकेश जी कुशाग्र-बुद्धिमान तथा एक मेधावी छात्र रहे हैं।

1.1.6 नौकरी -

राकेश जी का व्यक्तित्व प्रतिभा संपन्न है। वे एक कुशाग्र तथा बुद्धिमानी व्यक्तित्व के हैं। राकेश जी गुरुकुल, कॉंगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में हिंदी के आचार्य एवं अध्यक्ष थे। अब वे निवृत्त हो गए हैं तथा स्वामी श्रद्धानंद अनुसंधान प्रकाशन केंद्र के निदेशक पद पर कार्य किया है। इनके निदर्शन में दो दर्जन से अधिक शोधार्थी डॉक्ट्रेट की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं।

1.1.7 सम्मान एवं पुरस्कार -

डॉ. विष्णुदत्त राकेश भारतीय साहित्य-दर्शन, संस्कृति एवं धर्म साधनाओं के सर्वमान्य विद्वान हैं। डॉ. राकेश ने अनेक मौलिक ग्रंथों तथा शोध-निबंधों की रचना की है। डॉ. राकेश जी को विभिन्न संस्थाओं और सरकारों द्वारा सम्मानित और पुरस्कृत किया गया है। उन सम्मानों एवं पुरस्कारों का विवरण इस प्रकार है -

1.	देवरात (महाकाव्य)	मध्य प्रदेश शासन का अखिल भारतीय भवानी-प्रसाद मिश्र काव्य पुरस्कार।
2.	नभग	समन्वय सेवा न्यास भारत माता मंदिर हरिद्वार का अखिल भारतीय समन्वय सम्मान।

इन पुरस्कारों और सम्मानों के अलावा डॉ. विष्णुदत्त राकेश को पाठक और जनता के प्रेम ने सबसे अधिक सम्मानित किया है।

1.1.8 व्यक्तित्व की विशेषताएँ -

साहित्यकार के व्यक्तित्व का आंतरिक और बाह्य पक्ष साहित्य के माध्यम से अक्सर मुखरित होता है। उसके आंतरिक मनोभाव विविध आयामों से शब्दों का आकार ग्रहण कर पंक्ति-पंक्ति के माध्यम से पृष्ठों पर बिखरने लगते हैं। उसी में लेखक का आंतरिक और बाह्य पक्ष होता है।

1.1.8.1 बाह्य पक्ष -

बाह्य पक्ष के अंतर्गत हुलिया, वेशभूषा आदि का अंतर्भाव होता है। डॉ. राकेश जी के व्यक्तित्व का बाह्य पक्ष निम्नानुसार है -

1.1.8.1.1 हुलिया -

राकेश जी परिश्रमी, अध्ययन प्रिय, छात्रप्रिय और साहित्य की असाधारण सेवा करनेवाले व्यक्ति रहे हैं। उनके व्यक्तित्व का बाह्य पक्ष उसी के अनुकूल है। अंतरिक भाव-भावनाओं की भंगिमाएँ उनका बाहरी व्यक्तित्व है। मध्यम कद-काठी का स्वास्थ, सुगठित शरीर। सुंदर नाक-नक्शा गेहुआ रंग। हंसमुख चेहरा। निश्चल वाणी, निर्मल व्यवहार, शुद्ध बुद्धि-विचार, सामाजिक चेतना से उद्बुद्ध सहृदय। उनकी बाह्याकृति जीवन के अनुकूल और आंतरिक पक्षों को बल देने में पोषक है।

1.1.8.1.2 वेशभूषा -

उनकी वेशभूषा व्यक्तित्व के बाह्य और आंतरिक पक्ष के अनुकूल है। भारतीय संस्कृति के वे पुरस्कर्ता हैं। वे आधुनिक चकाचौंध से काफी दूर हैं। आजीवन धोती-कुर्ते में, कंधे पर शाल, माथे पर तिलक। इस सीधे वेशभूषा के कारण उनकी वाणी सीध-सरल मुसकराहट और भी भोली लगने लगती है।

1.1.8.2 अंतरंग पक्ष -

व्यक्तित्व के आंतरिक पक्ष में स्वभाह्न गुण, रुचि, निष्ठा, दृढ़ता, भावुकता, व्यक्ति के मानसिक क्रियाकलाप और अनुभव जगत् का समावेश होता है। रचनाकार का अंतरंग और अनुभव ही व्यापक रूप से अभिव्यक्ति पाकर नई कृति में उतरता है। इसमें स्वयं लेखक द्वारा अनुभूत की गई चीजें या घटनाएँ होती हैं।

1.1.8.2.1 सदाचारी -

सरलता, सादगी, निश्चल वृत्ति, सच्चाई और असाधारण व्यक्तित्व, सदाचारी आदि राकेश जी की स्वभावगत विशेषताएँ हैं। वे एक कुशल अध्यापक थे। छात्रों पर भी इनका प्रभाव रहता था। वे सरल और सही तत्वों का निर्वाह करनेवाले सदाचारी व्यक्ति थे। कबीर के अनुसार सदाचारी की परिभाषा निम्नानुसार करते हैं -

> ''केवल सत्य विचारा, जिनका सदा अहार
> कहे कबीर सुनो भई साधो, तरे सहित परिवार।''[1]

---

1. डॉ. सुशिला सिन्हा - लोह पुरुष कबीर, पृ. 61

ठीक इस दोहे के अनुसार ही सदाचार के सभी गुण मुझे श्रद्धेय विष्णुदत्त राकेश जी के व्यक्तित्व में दिखाई देते हैं।

1.1.8.2.2 ज्ञानी -

डॉ. राकेश जी एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उन्होने हिंदी, संस्कृति, धर्म साधना आदि पर समीक्षात्मक लेखन किया है। राकेश जी भारतीय-अभारतीय धर्म साधनाओं के ज्ञाता तथा चर्चित समीक्षक हैं। वेदों का कुशल ज्ञान भी राकेश जी को है। साहित्य के क्षेत्र में उन्होने सफलता अर्जित की है। राकेश जी उच्च कोटी के सफल वक्ता भी हैं। इससे स्पष्ट होता है कि कवि राकेश जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। अतः इससे स्पष्ट होता है कि कवि राकेश जी ज्ञानी, प्रतिभावान व्यक्ति हैं।

1.1.8.2.3 पौराणिक भक्ति और योग -

डॉ. राकेश जी पौराणिक भक्ति और योग में विश्वास करते हैं। ज्यादातर उनके साहित्य में पौराणिक भाव प्रकट होता है। वही विचार वे आधुनिक समाज के सम्मुख रखकर नया आदर्श स्थापित करना चाहते हैं।

1.1.8.2.4 आस्थावादी -

डॉ. विष्णुदत्त राकेश जीवन में आस्थावादी होने की ओर संकेत करते हैं। मनुष्य को अपने जीवन में निराश न रहकर हमेशा आशावादी होना चाहिए ऐसा वे कहते हैं, क्योंकि आशा ही जीवन है। कवि राकेश जी संतमतो विचारकों में आस्था रखते हैं। कवि अपने इन विचारों को पूरी निष्ठा के साथ प्रकट करते हैं।

1.1.8.2.5 दार्शनिक -

कवि राकेश जी दार्शनिक तत्त्वों को मानते हैं। कवि अपने मौलिक विचार प्रस्तुत कर एक प्रेरणा पाठकों को करना चाहते हैं। डॉ. नगेंद्र कहते हैं - "शास्त्रीय विचारकों में संप्रदाय का एक निश्चित अर्थ है और संप्रदाय की सत्ता के लिए उसकी दार्शनिक मान्यताओं का मौलिक होना तथा अन्य संप्रदायों से पार्थक्य होना आवश्यक समझा जाता है।"[1] राकेश जी अपने विचारों में दार्शनिक प्रतीत होते हैं।

---

1. डॉ विष्णुदत्त राकेश - उत्तर भारत के निर्गुण पंथ साहित्य डॉ. नगरेंद्र का मत, पृ. २

1.1.8.2.6 संत पंथ को आदर्श मानना -

कवि राकेश जी संत विशेष और उसके द्वारा प्रदर्शित मार्ग संत विशेष की रहनी और विचारधारा को पंथ का आदर्श मानते हैं। कबीर के अनुसार भी संत पंथ यह जीवन का आधार है। उससे जीवन सुखी होता है।

1.1.8.2.7 संत साहित्य के साथ शोध-सामग्री -

डॉ. राकेश जी ने साहित्यिक अवदान की अद्यतम उपलब्ध शोध सामग्री के आलोक में समीक्षा तथा आलोचना की है. केवल समीक्षा होनी चाहिए इसलिए नहीं तो साहित्य के आपात ठिक हैं या नहीं यह देखना उनका आद्य कर्तव्य था।

1.1.8.2.7.1 उदासी पंथ -

इसके अंतर्गत राकेश जी कहते हैं उदासी पंथ में श्रीचंद को साक्षात शिव का अवतार कहा है। उदासीन संप्रदाय में ब्रह्मा, हर, हरि, गौरी और गणेश इन पाँच देवों की समान भाव से उपासना की जाती है। मानव मात्र की समानता का उद्घोष इसमें किया है। भक्ति ज्ञान, योग का समन्वय स्थापित किया है। श्रीचंद्र जी साधक की रहनी में उसका निर्वाण पद की खोज में सतत लगा रहना आवश्यक तत्त्व मानते हैं। शरीर के विषम गढ़ के जीतने पर शब्द मिला स्वसंवेद्य ज्ञान प्राप्त हुआ तब निर्वाण की प्राप्ति हुई।

"विषम गढ़ तोड़ निर्भो घर आया।
नौबत शंख नगारा बाया।
गुरु अविनासी सूसम वेदा
निरवाण विद्या अपार भेद।"[1]

1.1.8.2.7.2 निर्मल पंथ के पुरस्कर्ता -

निर्मल पंथ की उत्पत्ति और विकास को लेकर ज्ञानी ज्ञानसिंह कृत निर्मल पंथ प्रदीपिका नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। आदिग्रंथ में नानकशाही का नाम निर्मल पंथ मिलता है। "निर्मल पंथ दर्शन के लेखक की यह स्पष्ट मान्यता है कि गुरुवाणी की व्याख्या वेदांत दर्शन के

1. डॉ. विष्णुदत्त राकेश - उत्तर भारत के निर्गुण पंथ साहित्य का इतिहास, पृ. 128

अनुरूप होनी चाहिए। ग्रंथ साहब के पाठ के साथ पुराणादि-शास्त्रों तथा राम कृष्णादि अवतारों की पुजा-सम्मान की भावना भी रहनी चाहिए।"[1] निर्मल पंथ में इतना प्रभाव रहा कि गुलाबदासी संप्रदाय के प्रवर्तक गुलाबदास ने निर्मलासंत देवासिंह से वेदांत पढ़कर उपदेश विलास जैसे प्रौढ़ वेदांत ग्रंथ की रचना भी उन्होने की।

1.1.8.2.7.3 गुसाई पंथ के समर्थक -

गुसाई नरहरिदास ने कृष्णलीला काशीदास ने योग विषयक पद लिखे। गुसाई गुरुओं ने इनके पार्थक्य को विस्मृत कर हिंदू धर्म की परंपरागत मान्यताओं के भीतर ही अपने गुसाई पंथ की नींव रखी। जप, तप, नाम-स्मरण आदि सामान्य साधनों का भी उल्लेख इस पंथ में मिलता है। आचार-विचार में पवित्रता के प्रति उसी प्रकार का आग्रह इस पंथ में है जैसा कबीर आदि महात्माओं ने व्यक्त किया।

1.1.8.2.7.4 गरीबदासी पंथ के प्रचारक -

गरीबदासी पंथ का विशेष प्रचार दिल्ली, अलवर, नारनौल, बिजेसर तथा रोहतक क्षेत्र में अधिक है। गरीबदास जी कबीर साहब के प्रति श्रद्धावान रहे हैं। वह परमात्मा का प्रतीक है। वह कबीर को ही परमात्मा का प्रतीक मानते हैं।

"जाम जौरां जासे डरें धर्मराय धरधीर।
ऐसा सद्गुरु एक है अदली अदल कबीर।"[2]

गरीबदास जी ने 'गुरुदेव-विरह, ज्ञान-विरह, रस, माया, साधु-महिमा तथा फुटकर साखी के अंग लिखे हैं। इनके साथ आदि पुराण, गणेश पुराण, कर्मकांड, मोक्ष पुराण, भक्तमाल मूल ज्ञान, शिव स्रोत, शिव की आरती आदि 42 रागों और फुटकर शब्दों की भी रचना की है। साधना की दृष्टि से भक्ति, बंदगी, योगाभ्यास, ध्यान सभी को वह संत मत के तत्व मानते हैं। इनका उपदेश गुरु का शब्द है।

---

1. डॉ. विष्णुदत्त राकेश - उत्तर भारत के निर्गुण पंथ साहित्य का इतिहास, पृ. 118
2. वही, पृ. 206

1.1.8.2.7.5 समता पंथ के भी समर्थक -

इस पंथ के मुख्य प्रवर्तक महात्मा मंगतराम जी महाराज रावलपिंडी पंजाब के गंगोठिया ब्राह्मण स्थान के निवासी थे। प्रारंभ में कबीर साहब की विचारधारा के समर्थक थे। समग्रवाणी को समानता का नाम दिया गया। समता प्रकाश की मूल लिपि उर्दू है जिसका हिंदी रूपांतर संगत समतावाद योगाश्रम जगाधरी से प्रकाशित हुआ है। समता प्रकाश 7 खंडों में विभाजित है। प्रथम खंड में परमात्मा की प्रार्थना, द्विवितीय खंड में प्रश्नोत्तर, तृतीय खंड में सदाचार, विचार, चतुर्थ खंड में अध्यात्मिक समस्या, पंचम खंड में योग, वैराग्य, षष्ठ खंड में शून्य, नाद ब्रह्म, निष्काम कर्म तथा सप्तम खंड में समता विज्ञान योग तथा आलखा बानी संकलित है।

समता पंथ का लक्ष्य सर्व मानवों के प्रति सेवाभाव तथा सत् स्थिति का स्वरूप पाना है। इसके अधिकारी विरक्त भी है और गृहस्थ भी। सदाचार और नाम-स्मरण समता पंथ के आदर्श सूत्र हैं। पंथ के अनुयायी अंत में आरती पाठ करते हैं। पंथों के पारस्परिक भेद और पंथ निर्माण के हेतुओं पर विचार किया है।

1.1.8.2.8 संत मत और उनकी साधना का निकट का परिचय -

भारतीय परंपरा में संत साधना को महत्व है। सत्कर्मशील, वैर-भाव रहित, परमात्मानिष्ठ, निष्काम, कर्मसाधक महापुरुष ही संत कहलाता है। उसकी रहनी समाज के लिए आदर्श और कर्म प्रेरणादायी होना चाहिए। संत की व्यापक चेतना भावात्मक एकता का संपादन करती है, जिसे परंपरागत दार्शनिक समत्व सिद्धि का नाम देते रहे हैं। डॉ. राकेशजी ने संतमत की प्राचीनता और उसके मौलिक स्वरूप की प्रतिष्ठा की है।

1.1.8.2.9 व्याकरण व्यथा -

डॉ. राकेश जी ने अपने शोध-कार्य में काव्य सुधाकर तथा काव्य-लक्षण, वर्गीकरण तथा शब्दार्थ विवेचन के संदर्भ में काव्य-सिद्धांत का विस्तृत अध्ययन किया है और व्याकरण की व्यथा तथा उसके बुरे प्रयोग के बारे में वे चिंतित हैं।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

1.1.8.2.10 अवधूत परंपरा का विकास -

अवधूत परंपरा को मान्यता पुराणों में मिली है। अवधूत परंपरा के पुनरूद्धारक दत्तात्रेय में शिव-विष्णू का सम प्रतिनिधित्व इसी समन्वय का प्रतीक है। भिक्षुओं को कपिलायनी और अवधूत शाखाओं के उद्धारक कपिल और दत्तात्रेय है और दोनों ही शैव तथा नारायणाश्रित परिव्राजकों में आदर तथा पूजा के पात्र समझ गए हैं। नागा संन्यासियों के महानिर्वाणी अखाड़े के इष्टदेव कपिल तथा पुराने अखाड़े के दत्तात्रेय हैं। अवधूत परंपरा के विकास और उसके साधना-तत्वों का निरूपण करते हुए निर्गुण संतमत को चिंतन की एक सहज स्वाभाविक विचारधारा का चित्रण राकेश जी ने प्रस्तुत किया है। मौर्योत्तर युग में भी अवधूतों की दत्त शाखा का गठन हुआ। वेद बाह्य कहे जानेवाले शैव, बौद्ध और शाक्त संप्रदायों की साधना पद्धतियाँ बौद्ध यहाँ एकीकृत हो गई।

1.1.7.2.11 वैदिक कर्मकांड के विरोधी -

कवि राकेश जी ने अवधूत परंपरा के विकास और उसके साधना-तत्वों का निरूपण करते हुए निर्गुण संतमत को चिंतन की एक सहज स्वाभाविक विचारधारा का परिणाम बताया गया है। सर्वाश में न तो वह वैदिक कर्मकांड के विरोध में प्रतिक्रियावादी आवेग के रूप में ही उत्पन्न कहा जा सकता है और न उसका उदय इस्लाम के आगमन के कारण सिद्ध किया जा सकता है। संत मत प्राक् वैदिक ऋषि और मुनि परंपराओं के समन्वित विचारधारा का फल है। कवि वैदिक कर्मकांड का विरोध करते हैं।

1.2 कृतित्व -

डॉ. विष्णुदत्त राकेश जी का साहित्य-संसार काफी समृद्ध है। वैसे देखा जाय तो साहित्यकार संसार के पथ-प्रदर्शक होते हैं। इसलिए साहित्यकार को उसी स्तर का ही साहित्य निर्माण करना आवश्यक होता है। उनका कृतित्व बहुआयामी है। उन्होने साहित्य में अपनी धुआँधार लेखनी चलायी है। उनका पूरा साहित्य संसार याने उनकी अनुभूति ही कही जा सकती है। कोई भी प्रतिभासंपन्न एवं संवेदनशील मनुष्य अपने कडुवे-मीठे अनुभव को अभिव्यक्त किए बिना नहीं रह सकता। इस संबंध में डॉ. ममता जी का कथन है- "व्यक्ति स्वभाव से ही

संवेदनशील प्राणी है। इसीलिए वह अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है।"[1] डॉ. राकेश का रचना संसार उच्च कोटि का है।

इसी प्रकार अपनी अलग पहचान रखते हुए हिंदी साहित्य के श्रेष्ठतम रचनाकारों के पंक्ति में राकेश जी का नाम अग्रक्रम में अवश्य लिया जा रहा है।

इस प्रकार कवि राकेश जी के कृतित्व के प्रभाव से उनका व्यक्तित्व और भी निखर उठता है। उनकी असामान्य बुद्धिमत्ता, गहरा अध्ययन तथा प्रतिभा शक्ति का अद्भूत चमत्कार ही उनका निम्नांकित रचना संसार है।

1.2.1 कविता -

1.2.1.1 श्रुतिपर्णा

1.2.1.2 देवरात

1.2.1.3 पर्णगंधा

1.2.1.4 नभग (खंडकाव्य), 1998

1.2.2 शोध-कार्य -

1.2.2.1 उत्तर भारत के निर्गुण पंथ साहित्य का इतिहास

1.2.2.2 रीतिकाल के ध्वनिवादी हिंदी आचार्यों का तुलनात्मक अध्ययन

1.2.3 समीक्षा -

1.2.3.1 आचार्य कुलपति मिश्र

1.2.3.2 पंत का सत्यकाम

1.2.3.3 आधुनिक हिंदी लेखक की ऊर्जा

1.2.3.4 आचार्य श्रीचंद्र : सिद्धांत

1.2.3.5 साधना और साहित्य

1.2.3.6 आचार्य किशोरीदास वाजपेयी और हिंदी शब्दशास्त्र

1.2.3.7 भारतीय अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना के आधार आद्यशंकराचार्य

---

1. डॉ. ममता - साठोत्तरी हिंदी उपन्यास : बदलता व्यक्ति, पृ. 47

1.2.3.8 दीक्षालोक
1.2.3.9 तुलनात्मक साहित्यशास्त्र
1.2.3.10 श्रीमद्भागवत प्रवचन
1.2.3.11 स्वामी श्रद्धानंद के संपादकीय लेख
1.2.3.12 हिंदी साहित्य का मध्यकाल
1.2.3.13 वेद मनीषी आचार्य प्रियव्रत वेदनाचस्पति

1.2.4 प्राप्त सामग्री -

1.2.4.1 आचार्य श्रीचंद्र की विचारधारा -

गुरुनानक देव के ज्येष्ठ पुत्र श्रीचंद्र ने उदासीन संप्रदाय में दीक्षा ली और उस संप्रदाय के पुनरूत्थान के लिए प्रवर्तक का काम किया। लेकिन हिंदी साहित्य का इतिहास उनके साहित्य व कार्यों के बारे में मौन रह जाता है। डॉ. राकेश ने श्रीचंद्राचार्य की विचारधारा व उनके साहित्य को अपने शोध द्वारा एक उचित स्थान दिया है। मध्यकाल के आचार्य संत जगद्गुरु श्रीचंद्राचार्य उच्चकोटि के दार्शनिक, समाज सुधारक, योगी, भक्त, कवि और युगचेता विचारक थे। राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक विषमता, धार्मिक सदाचार, अडंबर, पूर्ण जीवन शैली, सामंती शोषण तथा दमन के विरूद्ध उन्होने शासक, शोषक और धर्माचार्यों को खुली चेतावनी दी। इसमें मानव मात्र की समानता का उद्घोष किया। भक्ति, ज्ञान और योग का समन्वय राकेश जी के चिंतन की महत्तम उपलब्धि है।

1.2.4.2 उत्तर भारत के निर्गुण पंथ साहित्य का इतिहास -

प्रस्तुत कृति में कवि राकेश जी ने संत-साधना का निरूपण करते हुए वैदिक पौराणिक भक्ति के साथ योग, ज्ञान, सदाचार, तंत्र, समार्त्तधर्म, जैन धर्म, शंकर सिद्धांत, नाथ पंथ तथा सूफी चिंतन तत्त्वों के परिप्रेक्ष्य में संतधारा के उद्भव और विकास पर विचार किया है। इसमें संत साधना की उन मूलधाराओं को खोजने क़ी चेष्टा की गई है जो प्राक् इतिहास काल में प्रचलित थी और जिनका संकेत वैदिक तथा पौराणिक साहित्य में प्रचुर मात्रा में मिलता है। प्रस्तुत कृति में अवधूत परंपरा के विकास और उसके साधना-तत्त्वों का निरूपण करते हुए निर्गुण संतमत को चिंतन की एक सहज स्वाभाविक विचारधारा का परिणाम बताया गया है। संत की रहनी में ही

उसके द्वारा प्रवर्तित पंथ की विशेषता परिलक्षित होती है। अतः संत विशेष के आचार-विचार को ही पंथ निर्माण का मूलाधार मानकर प्रस्तुत कृति में राकेश जी ने उत्तर भारत के सभी छोटे-बड़े पंथों और उनकी परंपराओं के साहित्यिक अवदान की चर्चा उपलब्ध होती है।

1.2.4.3 रीतिकाल के ध्वनिवादी हिंदी आचार्यों का तुलनात्मक अध्ययन -

प्रस्तुत प्रबंध में रीतिकाल के सात प्रमुख आचार्यों के ध्वनि-प्रचार यहाँ पर उद्घाटित किए हैं। अब तक चिंतामणि, देव, कुलपति, सोमनाथ, श्रीपति, भिखारीदास, प्रतापसाहि तथा ग्वाल के दशांग निरूपण का अध्ययन तो किया गया है। किंतु कुमारमणि, नानुराम, कविसागर, जनराज तथा सूरति मिश्र का अपेक्षित अध्ययन नहीं हो पाया। राकेशजी ने प्रथम संप्रदाय के रूप में रीतिकाल के ध्वनिवादी आचार्यों की काव्यशास्त्रीय मान्यताओं का ध्वनि के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

1.2.4.4 नभग -

नभग डॉ. विष्णुदत्त राकेश जी का आधुनिक युगबोध से संकलित वैदिक आख्यान काव्य है। पुरानी तथा नई विचारधारा के संघर्ष की परिणति है, नभग का जीवन। प्रस्तुत खंडकाव्य में वर्तमानकालीन अनेक समस्याएँ, अनेक प्रश्न, मूल्य तथा आदर्श का उद्घाटन किया हुआ मिलता है। मुख्यतः कवि की संपूर्ण विचारधारा को 'नभग' खंडकाव्य में अंतर्विहित करने का प्रयास परिलक्षित होता है। इसमें नभग के प्रगतिवादी विचार साम्यवादी, मार्क्सवादी, गांधीवादी लगते हैं। नारी शिक्षा के विचारों में महात्मा फुले की विचारधारा, द्विजे विद्वान को गुरुकुल का आचार्य बनाने के विचारों में अंबेडकर विचारों के और छत्रपति शाहू महाराज के विचारों के दर्शन होते हैं। कवि राकेश जी ने यहाँ नभग का साधारणीकरण करके पुराण से आधुनिक संदर्भों को जोड़ने का एक सफल यथार्थवादी प्रयत्न किया है। राकेश जी का लेखन अत्यंत सशक्त एवं चिंतनपूर्ण महसूस होता है।

निष्कर्ष -

डॉ. राकेश जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के गहरे अध्ययन के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष तक पहुँच चूकी हूँ कि उनका व्यक्तित्व प्रतिभासंपन्न, स्वाभिमानी, जीवन की वास्तविकता के जानकार आदि बहुत सारी विशेषताओं से भरा पूरा मिलता है। उन्हें अपने माता-पिताके आशीर्वाद

और उनके परिश्रम के कारण उनका जीवन सफलतापूर्ण बना है। उन्होंने अपने जीवन में भयानक वास्तविकता को महसूस किया है। इन्ही अनुभूतियों का चित्रण उनके रचना संसार में भली-भाँति दिखाई देता है। कवि का रचना संसार काफी बड़ा है। उन्होंने समाज जीवन के जीवंत तथा ज्वलंत प्रश्नों को उठाकर वर्तमान में पनपी यथार्थ समस्याओं के खिलाफ अपनी कलम चलाई है। राकेश जी प्रमुखतः वर्ण व्यवस्था, जातीयता तथा धर्म के आड़ में छिपी राजनीति, शिक्षा में बढ़ता हुआ राजनीति का प्रभाव आदि के खिलाफ आवाज उठाते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। निष्कर्षतः कहना सही होगा कि राकेश जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुमुखी है। उनका व्यक्तित्व आदर्श, प्रेरणादायी तो है ही मगर अनुगमन करने योग्य तथा गृहणीय भी परिलक्षित होता है। उनका लेखन अत्यंत सशक्त एवं चिंतनपूर्ण महसूस होता है।